आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

● वर्ष - 10 ● अंक-2678 ● उदयपुर, सोमवार 25 अप्रैल, 2022 ● प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन ● कुल पृष्ठ : 4 ● मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिमलीगुड़ा (उड़ीसा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 अप्रेल 2022 को कल्याण मण्डपम सिमलीगुड़ा, जिला कोराटपुर (उड़ीसा) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लॉयन्स क्लब सिमलीगुड़ा, उड़ीसा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग वितरण 59, कैलिपर वितरण 21 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र कुमार जी पात्रों (अध्यक्ष नगर पालिका, सिमलीगुड़ा), अध्यक्षता श्रीमान् आनंद जी पाटवानिया (अध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनोज कुमार जी पात्रों (कोषाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमान् आनन्द जी सेनापति (उपाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमती सुमन्या जी (प्रोजेक्ट मेनेजर चिल्ड ऑफिसर, सिमलीगुड़ा) रहे।

डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री नाथू सिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सह–प्रभारी), श्री बहादुरसिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

बीकानेर (राजस्थान) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 10 अप्रेल 2022 को हंसा गेस्ट हाउस नोखा रोड़, बीकानेर (राजस्थान) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रामलाल सूरज देवी रांका, चेरिटेबल ट्रस्ट बीकानेर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 276, कृत्रिम अंग माप 35, कैलिपर माप 17 की सेवा हुई तथा 19 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् हंसराज जी डागा (समाजसेवी), अध्यक्षता श्रीमान् महावीर जी रांका (पूर्व चेयरमेन), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् सुभाश जी गोयल (समाजसेवी), श्रीमान् हनुमानमल जी रांका (ट्रस्टी सूरज देवी, रांका संस्थान), श्रीमान् मुकेश जी शर्मा, श्रीमती मधु जी शर्मा (शाखा प्रेरक) रहे।

डॉ, सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. गौरव जी तिवारी (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा (आश्रम प्रभारी), श्री हरीश सिंह जी रावत, श्री देवीलाल जी मीणा, श्री कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

We Need You !

1,00,000
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont.: 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग
(हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 26 अप्रैल, 2022

▪ माहुर, नादेड़, महाराष्ट्र ▪ विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

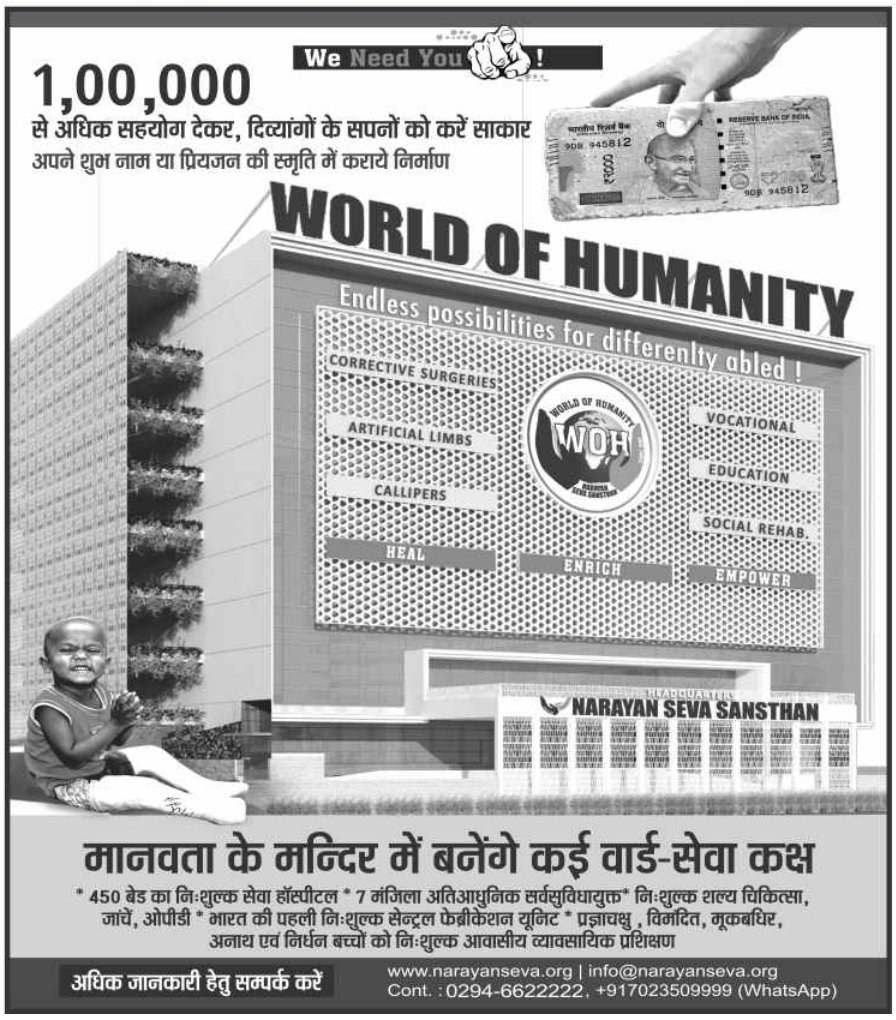

रोशन हुई 'रोशनी' की जिंदगी

दिल्ली के बदरपुर में घर की चारदीवारी से जब रोशनी दिवाकर (15) अपने हम उम्र साथियों को भागते– दौड़ते, हंसते–गाते, खेलते– खिलखिलाते देखती थी तो उसकी आंखें उन पर थम–सी जाती थीं। उसे लगता था जैसे वो भी उनमें शामिल है, कुछ देर के बाद वह दोनों पैर हाथों से पकड़े आंखों से आंसू बहाते बैठी होती थी। माता–पिता रोज की तरह उसे सांत्वना देते थे कि देखना तुम्हारे पैर एक दिन बिल्कुल ठीक होंगे। रोशनी पोलियो से पीड़ित थी। करीब एक दशक तक यही सिलसिला चलता रहता था। बस गुजारा कर सकने वाली तनख्वाह में प्राईवेट नौकरी करने वाले पिता, घर सम्भालने वाली मां, दो बेटियां जिनको लेकर घर वालों ने बहुत से ख्वाब संजोये थे मगर वो ख्वाब उस वक्त बिखर गये जब पता चला कि रोशनी जीवनभर चल–फिर नहीं सकेगी। रोशनी के माता–पिता ने हार नहीं मानी और बेटी को बहुत से डॉक्टर्स को दिखाया। डॉक्टर्स का कहना था कि इस इलाज में लाखों रुपयों का खर्च आएगा, इसके बावजूद यह गारंटी भी नहीं थी वह चल पाए। तभी परिवार की जिंदगी से अंधेरा हटाने और रोशनी के जीवन को नाम के अनुरूप रोशन करने के लिए नारायण सेवा संस्थान आगे आया जिसने उसकी जिंदगी को वाकई रोशन कर दिया। माता– पिता को नारायण सेवा संस्थान का पता उनके परिचित से लगा।

जो पूर्व में संस्थान की सेवा का लाभ उठा चुके थे। नारायण सेवा संस्थान ने उन्हें बताया कि आपका इलाज निःशुल्क और बिल्कुल सुरक्षित रूप से किया जाएगा।

करीब 4 साल पहले रोशनी अपनी बड़ी बहन के साथ नारायण सेवा संस्थान उदयपुर पंहुची। डॉक्टर्स के द्वारा रोशनी के दोनों पैरो की 3 सर्जरी की गई, इसके बाद रोशनी आज बैसाखी के सहारे चल–फिर सकने के साथ अपने डॉक्टर बनने के सपने को भी साकार होता देख रही है।

और शब्बीर चल पड़ा

शब्बीर हुसैन के परिवार में छह सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते है। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था। श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को पेरेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये। एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कार्यक्रम देखने कुछ दिन के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये। और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी। ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने– फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है। शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग– बंधु जिनका जीवन घर की चार दीवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

नारदजी ने फिर कहा– प्रभु , आपकी माया से ही एक नगर बना था। आपकी माया से ही वहाँ एक राजकुमारी और राजकुमारी के पिता। प्रभु आपने मुझे विवाह नहीं करने दिया। प्रभु ने कहा– बेटा तुम तो संत हो, आपका जीवन परमार्थ के लिये हुआ है। गृहस्थी भी अच्छे हैं, वानप्रस्थी भी अच्छे हैं, ब्रह्मचर्य आश्रम भी अच्छा है, सन्यासाश्रम भी अच्छा है। लेकिन नारद पार ब्रह्म परमात्मा, श्रीराम भगवान ने सत्संग दिया। जैसे छोटा बच्चा जब तक होता है, माँ कितना ख्याल रखती है उसका। कहीं अग्नि के पास न चला जाय। अरे ये कहीं ये गिर न जाय। ये घुटने– घुटने चलते कहीं ये बाहर न निकल जाये और जब बच्चा बड़ा हो जाता है। पार ब्रह्म परमात्मा कहते हैं– माँ कहती है अपने आपे पे खड़ा हो गया। अब ये अपना ख्याल खुद रख लेगा। नारदजी ने कहा– जय हो प्रभु ,जय हो प्रभु और नारायण नारायण करते हुए पुनः नारदजी प्रस्थान कर गये। ये संतकथा, ये भागवत कथा, ये श्रीराम भगवान के प्रेम की कथा, ये भोशाअवतार लक्ष्मणजी की कथा। और ये कथा आगे जब बढ़े।

एक पर्वत से सुग्रीव ने देखा, दो राजकुमार हाथों में धनुश–बाण लिये आ रहे हैं। एक गौरवर्ण के है, एक भयामवर्ण के हैं। बड़े तेजस्वी हैं। उनको डर लगा। कहीं मेरे बड़े भाई बाली ने मेरा वध करने के लिये किसी को तो नहीं भेज दिया। उस समय उनके पास हुनमानजी थे, बजरंगबलीजी थे। बजरंगबलीजी को कहा– आप वेश बदल के जाना, आप पता लगाना। यदि ये भगवान के अवतार हैं, मैं उनको नमन् करता हूँ। और यदि बाली के भेजे हुए कोई हैं, कोई राजा– राजकुमार है तो में इस पर्वत को छोड़कर भाग जाउंगा। क्योंकि इस पर्वत पर तो बाली स्वयं तो नहीं आ सकता शाप की वजह से, लेकिन किसी को भेज तो सकता है। और कथा आती है–

ये कथा बजरंगीबली की, ये कथा रामभक्त हनुमानजी की। ये कथा हुनमानजी, बजरंगबलीजी, मारूतीनदंन विप्र वेश धरि। विप्र का वेश धर के गये। दोनों राजकुमारो को पहले प्रणाम किया। बोले – आप अपना परिचय बताइये।

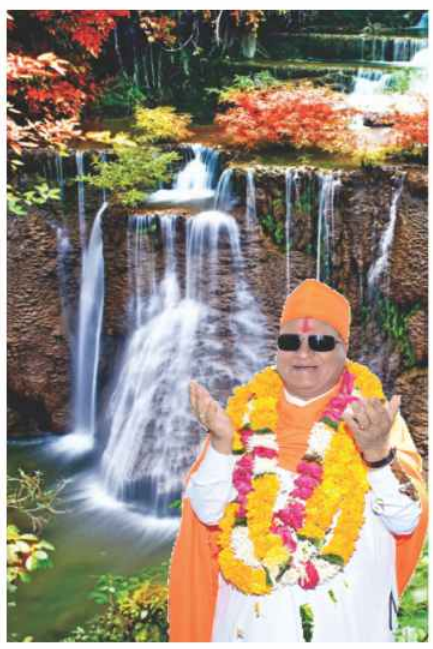

जरुरतमंदों की सेवा

एक हकीम गुरु गोविन्द सिंह के दर्शन करने आनन्दपुर गया। जब वह उनसे मिलकर वापस लौटने लगा तो गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा– जाओ तुम दीन दुखियों की सेवा करो।

हकीम अपने घर लौट आया। हकीम इबादत में तल्लीन था कि गुरु गोविन्द सिंह उसके घर आ पहुँचे। वह उनकी खातिर में तैयार होता, इससे पहले घर के बाहर किसी ने आवाज लगाई –हकीम साहब ! मेरे पड़ोसी की तबीयत बहुत खराब है। उसे बचा लीजिए। यह सुनकर हकीम थोड़ा असमंजस में पड़ा कि बीमार की सेवा की जाए या गुरु का सत्कार। उसने बीमार का इलाज करना उचित समझा। इलाज के पश्चात् हकीम जब घर आया तो गुरुजी घर पर बैठे मिले। वह गुरु जी से क्षमा मांगने लगा। गुरु जी ने गले लगाकर कहा मैं तुम्हारे सेवाभाव से बहुत खुश हुआ।

सम्पादकीय

हिंसा किसी भी सभ्य समाज के लिये नासूर होता है। अहिंसक भाव समाज के शृंगार होते हैं। हिंसा से व्यक्ति की क्रुरता को बढ़ावा मिलता है तथा कोई भी हिंसक होकर अपने मूल स्वभाव से भटक जाता है। यह हिंसा ही सारी दुनिया में झगड़ों की जड़ है। जबकि अहिंसा के द्वारा सत्य व प्रेम को सहजता के संचारित किया जा सकता है।

जब हम हिंसा की बात करते हैं तो साधारणतया हमारा ध्यान दिखती हुई या शारीरिक हिंसा पर ही जाता है। इस प्रकार की हिंसा जघन्य अपराध है किन्तु विचारों की या मानसिक हिंसा तो इससे भी ज्यादा खतरनाक है। शारीरिक हिंसा का शिकार कभी भी परिस्थितियां बदलने पर उसे विस्मृत कर सकता है। किन्तु मानसिक या वैचारिक हिंसा का असर बहुत गहरा होता है। इससे आहत व्यक्ति का उबरना बड़ा कठिन होता है। अहिंसा वह शुभ अस्त्र है जिससे हिंसा का शमन होता है।

कुछ काव्यमय

हिंसा और अहिंसा का भेद
मानवता का निर्धारण है।
यही उसके पतन और
उत्थान के कारण है।
हिंसा त्यागें, अहिंसा अपनायें।
सही अर्थों में मानव बन जायें।

अवसर बहुतेरे

किसी गांव में एक कुम्हार रहता था। वह बहुत अच्छे और सुन्दर मिट्टी के बर्तन बनाता था।उसने चार घड़े बनाये। वे बहुत सुन्दर और बड़े थे। बावजूद इसकेअन्य बर्तन तो बिक रहे थे लेकिन उनका कोई खरीददार नहीं आ रहा था। इस बात से चारों बहुत दुखी थे। वे चारों खुद को बेकार समझने लगे थे। एक समय ऐसा भी आया जब वे चारों चारों अकेले रह गए। चारों आपस में बात करने लगे।

पहला बोला, "मैं एक बड़ी और सुन्दर मूर्ति बनना चाहता था ताकि किसी अमीर के घर की शोभा बनता। लेकिन एक घड़ा ही बन कर रह गया जिसे कोई नहीं पूछता है।"तभी दूसरा बोला, मैं एक दीया बनना चाहता था ताकि रोज जलता और चारों ओर रोशनी बिखेरता। तभी तीसरे घड़े ने कहा, "किस्मत तो मेरी भी ख़राब है। मित्रों, मुझे पैसों से बहुत प्यार है। मैं एक गुल्लक बनना चाहता था। लोग

मुझे खुशी से ले जाते और हमेशा पैसों से भरा रखते। अपनी बात कहने के बाद तीनों चौथे घड़े की तरफ देखने लगे। चौथा घड़ा मुसकुराया और बोला, "आप तीनों क्या समझते हो, क्या मैं दुखी नहीं हूँ? दोस्तों! मैं तो एक खिलौना बनना चाहता था ताकि जब बच्चे मुझसे खेलते तो बहुत खुश होते और उनकी प्यारी सी हंसी और खुशी को देखकर मैं भी खुश होता। लेकिन कोई बात नहीं। हम एक उद्देश्य में असफल हो गए तो क्या। दुनिया में अवसरों की कोई कमी नहीं है। एक गया तो आगे और भी अवसर मिलेंगे। बस धैर्य रखो और इंतजार करो । एक महीना बीता ही था कि ग्रीष्म ऋतु आ गई। ठंडे पानी की जरुरत के लिए लोगों ने घड़े खरीदने शुरू कर दिए। चारों घड़े बड़े और सुन्दर तो थे ही लोगों ने ऊँचे दामों में उन्हें खरीद लिया।

आज वे सैकड़ों लोगों की प्यास बुझाते हैं और बदले में खुशी और दुआएं पाते हैं। दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो वह नहीं बन पाते जो वे बनना चाहते हैं। ऐसा होने पर लोग खुद को असफल महसूस करते हैं और हमेशा अपनी किस्मत को दोष देते रहते हैं। मित्रों! क्या हुआ यदि हमने एक अवसर गवां दिया। दुनिया में अवसरों की कमी थोड़े ही है। यदि चारों ओर देखा जाये तो अवसर ही अवसर दिखाई देंगे। कोई एक अवसर आपको सफलता जरूर दिला देगा। हमेशा धैर्य बनाये रखो। धैर्य रखकर लगातार प्रयास करने वाले लोग अंत में सफल जरूर होते हैं।

— **कैलाश 'मानव'**

सपना पूरा करने के जिद

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति कठिन परिश्रम कर लक्ष्य तक पहुँचने वाला ही होता है कि कोई घटना–दुर्घटना उससे उसका सपना छीन लेती है, लेकिन जुलियो ने साबित किया कि मन यदि में लग्न और उत्साह हो तो कोई बाधा शिखर तक पहुँचने में रोड़ा बन सकती।

23 सितम्बर, 1943 को जन्मे जुलियो इग्लेसियस का बचपन से अपने पसंदीदा क्लब–रियल मेड्रिड की

तरफ से फुटबॉल खेलने का सपना था। अभ्यास करते–करते वे अच्छे गोलकीपर बन गये। 20 वर्ष की उम्र तक आते–आते उनका सपना साकार होने के आसार बनने लगे। एक दिन उन्हें रियल मैड्रिड से खेलने के लिए अनुबंधित भी कर लिया गया। फुटबॉल के अनेक दिग्गज यह मान कर चल रहे थे कि जुलियो शीघ्र ही स्पेन के पहले दर्जे के गोलकीपर बन जाएंगे। 1963 की एक शाम को हुई भयानक कार–दुर्घटना ने जुलियो की जिन्दगी को पूरी तरह बदल कर रख दिया। रियल मेड्रिड और स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाले जुलियो अस्पताल में थे। उनकी कमर से नीचे का हिस्सा पूरी तरह लकवाग्रस्त हो गया। जुलियो फिर कभी चल पाएँगे अथवा नहीं, इसके बारे में शंका थी। जुलियो जीवन से निराश हो चुके थे। 8 माह बिस्तर पर रहने वाले जुलियो की जिन्दगी तब फिर से पटरी पर लौटने लगी जब उन्हें एक नर्स ने गिटार भेंट किया। जुलियो ने गाने, कविताएँ लिखने के साथ गिटार बजाना और गाना सीखा। उसके पश्चात्, उन्होंने एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया तथा शानदार गीत गाकर प्रथम पुरस्कार जीता। आज वे विश्व के जाने माने गीतकार, संगीतकार, गायक और गिटार वादक हैं। बंधुओं ! सपना पूरा नहीं हो पाने पर निराश होने की आवश्यकता नहीं, जीवन में आपके लिए अभी भी बहुत–कुछ बचा हुआ है। उसे हासिल करने की जिद को जारी रखिए। — **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

एक दिन कैलाश अपने कार्यालय में बैठा रोज का काम काज निपटा रहा था तभी एक व्यक्ति ने प्रवेश किया इसके हाथों में एक टोकरा था। इस व्यक्ति ने यह टोकरा कैलाश के टेबल पर ला कर पटक दिया। कैलाश अचानक उपस्थित हुए इस व्यवधान से चौंक गया। टोकरे में गुलाब के फूल थे। उसने सोचा जरूर कार्यालय में किसी ने मंगवाये होंगे। उसने प्रसन्न होकर अपनी निगाहें उपर की तो उसे उस व्यक्ति का तमतमाता चेहरा नजर आया। वह गुस्से से आग बबूला हो रहा था।

कैलाश ने उपर देखते ही वह आवेश से बोल पड़ा–ये फूल काफी हैं या और लाऊं। कैलाश कुछ समझ नहीं पाया। एक तरफ तो यह व्यक्ति फूल लेकर आया और दूसरी तरफ वह इतना क्रोधित हो रहा है। कैलाश ने अपनी जिज्ञासा को विराम दिया और व्यक्ति को अपने पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठने को कहा। उसे पानी पिलाया। उसके चेहरे पर अब थोड़ी शांति महसूस हुई तब उसने फिर पूछा–इतने फूल काफी हैं या और लाऊँ?

कैलाश का कुतुहल सामाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहा था, उसने अपने चेहरे पर मुसकान लाते हुए वह प्रश्न पूछ ही लिया जो इतनी देर उसने धैर्यपूर्वक दबाये रखा था–किस खुशी में लाये हैं ये फूल आप? वह बोला–खुशी में नहीं दुःख में लाया हूं। कैलाश का कुतुहल शांत होने की बजाय और बढ़ गया, पूछ बैठा–मैं समझा नहीं। वह बोला 180 नो रिप्लाई, 190 नो रिप्लाई, 197 नो रिप्लाई, कोई फोन काम नहीं कर रहा। इसका मतलब सब सेवाओं का देवलोक गमन हो गया है, ये फूल उन्हें श्रद्धांजलि देने ही लाया हूं, उसने फिर कहा –ये भी कम पड़ते हों तो और लेकर आऊं। विरोध प्रदर्शन के इस शांतिप्रिय तरीके से कैलाश अत्यन्त प्रभावित हुआ। गांधीगिरी की अवधारणा तो काफी वर्षों बाद देखने में आई मगर इसका प्रयोग किसी न किसी रूप में हर काल में होता रहा है। कैलाश ने अब अत्यन्त विनीत होते हुए उससे प्रार्थना की कि– हमारी इतनी इज्जत तो खराब मत करो। तब उसने कहा कि आप तो इसके भी काबिल नहीं हो।

अंश - 075

बोध कथा

एक कोयल आम के पेड़ पर बैठी थी। उधर से एक कौआ तेज रफ्तार से उड़कर जा रहा था। कोयल ने पूछा –'भैया ! कहां भाग रहे हो?' कौआ बोला –'बहिन ! इस देश को छोड़कर विदेश जा रहा हूं, क्योंकि यहां मेरा सम्मान है। जहां जाकर बैठता हूं, वहां से उड़ा दिया जाता हूं। सर्वत्र यह अपमान मुझे सहन करना पड़ता है' कोयल बोली–भैया! स्थान को बदलने से क्या होगा? तुमने 'कां', 'कां' करना छोड़ा या नहीं? इसे बदले बिना कुछ नहीं होगा। तुम चाहे विदेश में चले जाओ, वहां भी तुम उड़ा दिए जाओगे।' स्थान परिवर्तन से कुछ नहीं होता, स्वभाव और वाणी को बदलने से ही सम्मान मिल सकता है।

फल–सब्जियां साथ तो नहीं रख रहे आप?

बाजार से फल और सब्जियां लाकर एक–साथ डलिया या फ्रिज में रख देते हैं। पर क्या आप जानते हैं कि कुछ फल और सब्जियां साथ रखने से खराब हो जाती हैं। इन्हें कैसे रखना है आइए जानते हैं.....

1. **खीरा अलग रखें**

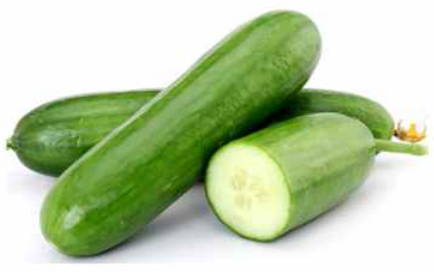

इसे किसी फल या सब्जी के साथ न रखते हुए अलग रखें। खासतौर पर तरबूज, केला या टमाटर के साथ नहीं रखें तो बेहतर है। फल एथिलीन गैस छोड़ते है जिससे खीरा जल्दी खराब हो जाता है। अगर फ्रिज में भी रख रहे हैं तो खीरा इनसे अलग रखें।

2. **सेब और संतरा**

इन्हें एक–साथ रखने के बजाय सेब को फ्रिज में रखें। वहीं संतरे को खुले में रखें। संतरा मैश बैग में रखें ताकि इससे हवा आर–पार होती रहे। मैश बैग कपड़े की जाली से बना हुआ होता है।

3. **आलू और प्याज**

अमूमन घरों में आलू और प्याज एक ही डलिया में रख देते हैं। प्याज आलू को जल्दी खराब कर देता हैं ऐसे में इन्हें खुला तो रखें पर अलग–अलग रखें। आलू कागज के बैग में रख सकते हैं इससे ये लंबे समय तक सुरक्षित रहेंगे। प्याज के साथ लहसुन रख सकते हैं।

4. **टमाटर खुला रखें**

फ्रिज में टमाटर बेस्वाद हो जाते हैं। इन्हें डलिया में रखकर खुला रखें। उपयोग किया हुआ आधा टमाटर भी फ्रिज में नहीं रखें। कोई भी फल या सब्जी फ्रिज में खुली रखने पर इनमें बैक्टीरिया पनप जाते हैं, जो सेहत को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

5. **कद्दू और सेब**

अगर सेब और कद्दू एक साथ रखते हैं तो इन्हें अ ल ग – अ ल ग रखें। सेब से कद्दू जल्दी खराब हो जाता है। कद्दू को हमेशा कमरे के सामान्य तापमान से ठंडे स्थान पर रखें पर फ्रिज जितना ठंडा भी नहीं। हालांकि कद्दू हमेशा कम मात्रा में ही खरीदना चाहिए।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

लालच बुरी बला, पाप का बाप लोभ। ऐसे –ऐसे महान परिवार, एक परिवार में हम गये, पूरी दीवार पर गीता सार लिखा हुआ था। बहुत सोचा आज तो यहाँ से सेवाधाम के लिए सहयोग हो जायेगा। कुल 40 कमरे करने हैं, 18 हो गये हैं। 22 बाकी हैं, एक दो कमरे सेठ साहब लिखा देंगे। बहुत बडी हवेली है, अन्दर गीता सार लिखा हुआ, पी.जी. जैन साहब के परिचित हैं, आओ बैठो एलबम देखा, पौने घंटे तक सुनते रहे, मैं सोच रहा था, अभी इनके श्रीमुख से तीन–चार कमरे लिख लो, आपके बकाये सारे कमरे लिख लो, और सेवाधाम बना दो। क्या लाया? क्या ले जायेगा? पौने घंटे बाद बोले– हाँ, मैं दो साल बाद आऊँगा कभी राजस्थान। आपका काम अच्छा है, फोटोग्राफ अच्छे हैं। हे! प्रभु! ये हृदय की दया, रोम–रोम से उठी तरंगें, अन्तरमन में सदभावों की पावन गंगा, क्या हो गया? पी. जी. जैन साहब ने पूछा वे बोले जैन साहब आप समाजसेवी हैं। फिर उठकर जाने लगे तो बोले भोजन करके तो जाओ, जीम लो, पी. जी. जैन साहब ने मेरी हथेली दबाई बोले–बाबू जी हाँ, मत भर देना। कोई बात नहीं, आपने नहीं दिया।

देनहार कोई और है,
देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मुझ पर करे,
ताते नीचे नैन।।

उस समय मन में क्या आया था? हुबहु ये जिह्वा वर्णन नहीं कर पायेगी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी। जो आँखों ने 1989 में देखा, उन आँखों के पास जुबान नहीं हैं। सोचा था ऐसा प्रसंग नहीं लिखाऊँगा, कोई बात नहीं। भोजन मीठा–मीठा करते हैं, कभी कड़वा भी तो आ जाता है। बाबू जी हँसकर बोले कहीं और चलें ऐसी जगह पर। मैंने कहा –कभी और आयेंगे, तो चलेंगे। और हैदराबाद के पास में सिकन्दराबाद में हमारे शान्तिलाल जी पोखरणा साहब के ससुराल में उनके सास–ससुर विराजा करते थे। कपड़ों का बड़ा व्यापार, उन्होंने भी कमरा लिखवाया। दापोली जब गये, शान्तिलाल जी पोखरणा से भी घंटे भर बातचीत हुई, बडे प्रसन्न हुये, बोले ये क्या लाये? मैंने कहा –बाबू जी ये 17 कमरे बचे हुए हैं। इनको बनाने वाले दानदाता मिल जावे, सेवाधाम बन जावे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 428 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023